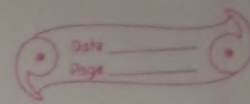


Date
6/8/20

Philosophy



Kants Critical Philosophy

Short point (important)

- i) ज्ञान और सत्य में अभिन्नता है सत्य सत्य (being) है जिसे जानना ज्ञान (knowledge) है।
- ii) ज्ञान की उत्पत्ति अनुभव और बुद्धि से होती है।
- iii) अनुभववाद का स्रोत शक्तिानुभव ही मानता है।
- iv) बुद्धिवाद के अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि से होती है।
- v) बुद्धिवाद ज्ञान को सार्वभौम, निरिच्छित और अपेक्षित मानता है।
- vi) अनुभववाद ज्ञान को संदिग्ध, अनिश्चित, नवीन और संग्राह्य स्वीकारता है।
- vii) बुद्धिवाद के अनुसार ज्ञान प्रागनुभविक और विरलक्षणालम्ब है।
- viii) अनुभववाद के अनुसार ज्ञान शक्तिानुभविक और संरलक्षणालम्ब है।
- ix) अनुभववाद का आधार परम्परित (प्राथमिक) विज्ञान है।
- x) बुद्धिवाद का आधार गणित है।
- xi) कान्ट समीक्षक का प्रवर्तक है।

Date
28/7/20

Western Philosophy

Kant's Critical Philosophy

इमानुएल कान्ट एक जर्मन दार्शनिक है। उन्होंने बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों विद्वानों की समीक्षा करते हुए गुणो और दोषों को उद्घाटित किया। उनके दृष्टिकोण को लेकर ज्ञान की एक समुचित परीक्षा दी गई। इतिहास कान्ट के ज्ञान-विद्वान्त को समीक्षा करते हैं।

कान्ट के अनुसार बुद्धिवाद की अवस्था नहीं समझी है कि वह कोई नया ज्ञान नहीं देता है। मानव-मन में नीहित प्रत्यक्षों का विश्लेषण करते ज्ञान प्राप्त किया जाता है इतिहास कान्ट नया नहीं देता, बल्कि पहले से जाना हुआ देता है, अतः बुद्धिवाद ज्ञान का प्रागनुभविक मातृ है। कान्ट ने भी स्वीकार है कि ज्ञान प्रागनुभविक होता है। लेकिन विश्लेषणात्मक नहीं होता है।

पलतु ज्ञान का आत्मज्ञ अनुभव ले होता है कान्ट के अनुसार अनुभववाद की पुनर्नी है कि वह नया ज्ञान देता है, पहले से कुछ भी जाना हुआ नहीं होता, बल्कि इन्द्रियसंवेदनाओं के ग्रहण के पश्चात ही ज्ञान होता है। पलतु अनुभववाद की समझी है कि यह निश्चित, असंदिग्ध और सार्वभौम ज्ञान नहीं है करता है। ज्ञान संशय नहीं होता है बल्कि निश्चित और असंदिग्ध होता है। ज्ञान ज्ञान बुद्धिवाद देता है यह बुद्धिवाद की पुनर्नी है। इतिहास कान्ट ने बुद्धिवाद को अनुभववाद दोनों की समझीयों को स्वीकार करते हुए दोनों की विशेषताओं को स्वीकार किया, जो ज्ञान को नवीन, सार्वभौम असंदिग्ध और निश्चित मातृ है।